अध्याय 10: भारति, जय, विजयकरे!

विषय-सूची

7 प्रश्नावली · 17 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1	मेरे उत्तर मेरे तर्क	5 प्रश्न
प्रश्नावली 10.2	अर्थ और भाव	2 प्रश्न
प्रश्नावली 10.3	मेरी समझ मेरे विचार	4 प्रश्न
प्रश्नावली 10.4	कविता का सौंदर्य — विशेषताएँ	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.5	विषयों से संवाद — चुनिंदा प्रश्न	2 प्रश्न
प्रश्नावली 10.6	समास — समस्त पद एवं विग्रह	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.7	अलंकार — समझ और प्रयोग	2 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1 — मेरे उत्तर मेरे तर्क

प्रश्न 1

'भारति, जय, विजयकरे' कविता में विशेष रूप से— (क) भारत की भौगोलिक संरचना की प्रशस्ति की गई है। (ख) भारत की सांस्कृतिक विविधता बताई गई है। (ग) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है। (घ) भारत के खनिज पदार्थों के बारे में बताया गया है।

हल

कविता में कवि निराला ने भारत को कनक-शस्य-कमलधरे (धन-धान्य और कमल को धारण करने वाली) कहकर संबोधित किया है — यह कृषि-संपन्नता और प्रकृति की सुंदरता का प्रतीक है।

तरु-तृण-वन-लता को भारत का वसन, गंगा को हार, हिमालय को मुकुट और ओंकार को प्राण बताकर कवि ने भारत की प्राकृतिक समृद्धि के साथ उसकी आध्यात्मिक और ज्ञान-परंपरा का भी गुणगान किया है।

अतः सही उत्तर (ग) है — भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है।

उत्तर: (ग) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है।

प्रश्न 2

'कनक-शस्य-कमल धरे' पंक्ति का भावार्थ है— (क) भारत की धन-धान्य संपन्नता (ख) भारत की नदियों का सौंदर्य (ग) भारत के लोक-जीवन की सुंदरता (घ) भारत की सैन्य शक्ति और औद्योगिक विकास

हल

'कनक' का अर्थ है सोना और 'शस्य' का अर्थ है सुनहरी फसल।

'कनक-शस्य' = सोने जैसी फसलें (सुनहरी धान्य-संपदा) और 'कमलधरे' = कमल को धारण करने वाली (भारतमाता/सरस्वती)।

यह पंक्ति भारत की कृषि-परंपरा और धन-धान्य की संपन्नता का संकेत देती है।

अतः सही उत्तर (क) है।

उत्तर: (क) भारत की धन-धान्य संपन्नता

प्रश्न 3

समस्त विश्व में भारत के महत्व का उद्घोष करने वाली पंक्तियाँ हैं— (क) गंगा ज्योतिर्जल-कण/ धवल धार हार गले (ख) गर्जितोर्मि सागर-जल/ धोता शुचि चरण युगल (ग) भारति, जय, विजयकरे/ कनक-शस्य-कमलधरे! (घ) ध्वनित दिशाएँ उदार/ शतमुख-शतरव-मुखरे!

हल

'ध्वनित दिशाएँ उदार, शतमुख-शतरव-मुखरे!' — इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि भारत की सभी दिशाएँ उदार स्वरों से गुंजायमान हैं।

'शतमुख' = सौ मुखों से और 'शतरव' = सौ प्रकार की ध्वनियों से मुखर होना — यह भारत की बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक विविधता और विश्व में उसकी गूँज (उद्घोष) का प्रतीक है।

अन्य विकल्प भारत की प्राकृतिक सुंदरता (गंगा, सागर) या आशीर्वाद की कामना के संदर्भ में हैं, विश्व में उद्घोष के नहीं।

अतः सही उत्तर (घ) है।

उत्तर: (घ) ध्वनित दिशाएँ उदार/ शतमुख-शतरव-मुखरे!

प्रश्न 4

कविता की भाषा और शैली किस विशेषता से संपन्न है? (क) सरल, बोल-चाल की भाषा (ख) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त (ग) सरस और हास्य-व्यंग्यपूर्ण (घ) संवादात्मक और विश्लेषणात्मक

हल

कविता में 'कनक-शस्य-कमलधरे', 'गर्जितोर्मि', 'ज्योतिर्जल-कण', 'शतमुख-शतरव-मुखरे', 'हिम-तुषार', 'प्रणव ओंकार' जैसे संस्कृत-निष्ठ और समासयुक्त (सामासिक) शब्दों का बहुलता से प्रयोग हुआ है।

यह शैली निराला की छायावादी काव्य-परंपरा की पहचान है — गहन भाव, ओजपूर्ण संस्कृत शब्द-भंडार और समास-प्रधान पदावली।

अतः सही उत्तर (ख) है।

उत्तर: (ख) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त

प्रश्न 5

भारत के वस्त्रों में 'तरु-तृण-वन-लता' और गले में 'गंगा-धारा' को चित्रित कर कवि किस प्रकार की चेतना का संदेश देते हैं? (क) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक (ख) राष्ट्रीयता और देशप्रेम (ग) ऐतिहासिक और भौगोलिक (घ) सामाजिक और राजनीतिक

हल

कवि ने वन, तृण, लता-वल्लरी (तरु-तृण-वन-लता) को भारत के वस्त्र और गंगा की धवल धारा को हार के रूप में प्रस्तुत किया है।

इसमें दो संदेश एक साथ हैं — प्रकृति का संरक्षण (पर्यावरणीय चेतना) और भारत की प्राकृतिक धरोहर को सांस्कृतिक आभूषण मानना (सांस्कृतिक चेतना)।
प्रकृति को मानव-शरीर के अंग-वस्त्र-आभूषण के रूप में देखना पर्यावरण प्रेम और सांस्कृतिक गौरव दोनों को जोड़ता है।
अतः सही उत्तर (क) है।

उत्तर: (क) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक

प्रश्नावली 10.2 — अर्थ और भाव

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ समझते हुए इनका भाव स्पष्ट कीजिए— (क) 'लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर-जल धोता शुचि चरण युगल!'

हल

शब्दार्थ: पदतल = पैरों के नीचे (तलवा); शतदल = कमल; गर्जितोर्मि = गरजती हुई लहरों वाला; शुचि = पवित्र; चरण युगल = दोनों पैर।

अर्थ: लंका (दक्षिण) में पैरों के नीचे शतदल-कमल है (अर्थात् भारतमाता के चरणों में कमल प्रस्फुटित है); गरजती हुई लहरों से युक्त समुद्र का जल भारतमाता के पवित्र दोनों चरणों को धोता है।

भाव: कवि ने भारत को एक दिव्य देवी की तरह चित्रित किया है। उसके पैरों तले दक्षिण में हिंद महासागर लहराता है और सागर की गरजती तरंगें मानो भारतमाता के चरण-प्रक्षालन (चरण धोने) का कार्य कर रही हैं। यह भारत के भौगोलिक वैभव — दक्षिण में समुद्र का विस्तार — और भारतभूमि की पवित्रता का काव्यात्मक चित्रण है।

उत्तर: समुद्र की गरजती तरंगें भारतमाता के पवित्र चरण धोती हैं — कवि ने भारत की भौगोलिक दक्षिणी सीमा (हिंद महासागर) को दिव्य चरण-प्रक्षालन के रूप में चित्रित किया है।

प्रश्न 2

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ समझते हुए इनका भाव स्पष्ट कीजिए— (ख) 'प्राण प्रणव ओंकार, ध्वनित दिशाएँ उदार, शतमुख-शतरव-मुखरे!'

हल

शब्दार्थ: प्रणव = ओंकार, परमेश्वर; ओंकार = 'ओम्' मंत्र; ध्वनित = गूँजती हुई; उदार = विशाल, दानशील; शतमुख = सौ मुखों वाला; शतरव = सौ ध्वनियाँ/शोर; मुखरे = मुखर, बोलता हुआ।

अर्थ: भारत का प्राण 'प्रणव ओंकार' (ईश्वरीय ओम्-ध्वनि) है; भारत की सभी दिशाएँ उदार भाव से गूँज रही हैं; यह भूमि सौ मुखों और सौ प्रकार की ध्वनियों से मुखर है।

भाव: कवि कहते हैं कि भारत की आत्मा आध्यात्मिकता और ओंकार-नाद में बसती है। यहाँ की विस्तृत दिशाएँ उदारता से ओतप्रोत हैं। 'शतमुख-शतरव-मुखरे' से तात्पर्य है कि भारत अनेक भाषाओं, संस्कृतियों, कलाओं और विचार-धाराओं की विविधता से समृद्ध और जीवंत है — यह विविधता में एकता का प्रतीक है।

उत्तर: भारत का प्राण ओंकार (आध्यात्मिक नाद) है और यह भूमि अनेक भाषाओं-संस्कृतियों की सौ ध्वनियों से मुखर और उदार है — विविधता में एकता का काव्यात्मक उद्घोष।

प्रश्नावली 10.3 — मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1

कविता में कवि की किस भावना की अभिव्यक्ति मिलती है?

हल

इस कविता में कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की देशप्रेम और राष्ट्रभक्ति की भावना की प्रमुख अभिव्यक्ति मिलती है।

कवि ने भारत को एक देवी-स्वरूप में प्रस्तुत किया है — वे भारतभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा, गौरव और विजय-कामना व्यक्त करते हैं।

कविता में यह भावना भी है कि भारत अपनी प्राकृतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक समृद्धि के कारण विश्व में अजेय और विजयी है।

इसके साथ ही कवि की प्रकृति-प्रेम की भावना भी मिलती है — वन, नदी, हिमालय, फूल-पत्तियाँ — सब को भारत के आभूषण-वस्त्र के रूप में देखना प्रकृति के प्रति गहरी आत्मीयता दर्शाता है।

उत्तर: कवि की देशप्रेम, राष्ट्रगौरव, प्रकृति-प्रेम और भारत की विजय की कामना — ये भावनाएँ कविता में प्रकट होती हैं।

प्रश्न 2

कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया गया है? क्या आप मानते हैं कि प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का काम है? क्यों?

हल

कविता में प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अनेक बिंबों के माध्यम से हुआ है:

— 'तरु-तृण-वन-लता वसन' — पेड़, तिनके, वन और लताएँ भारत के वस्त्र हैं।

— 'अंचल में खचित सुमन' — आँचल में फूल जड़े हैं।

— 'गंगा ज्योतिर्जल-कण, धवल धार हार गले' — गंगा की चमकदार, सफेद धारा गले का हार है।

— 'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार' — हिम-आच्छादित हिमालय सिर का मुकुट है।

— 'लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर-जल' — दक्षिण में समुद्र की लहरें चरण धोती हैं।

प्रकृति-संरक्षण और देशप्रेम: हाँ, प्रकृति का संरक्षण देशप्रेम का एक महत्वपूर्ण कार्य है। जब हम नदियों को स्वच्छ रखते हैं, वनों की रक्षा करते हैं और पर्यावरण को बचाते हैं, तो हम उसी भारतभूमि की रक्षा कर रहे हैं जिसे कवि ने भारतमाता कहा है। प्रकृति की विनाश से देश का अस्तित्व और सुंदरता दोनों खतरे में पड़ती हैं।

उत्तर: कवि ने वन-लता को वस्त्र, गंगा को हार, हिमालय को मुकुट, और सागर को चरण-प्रक्षालन के रूप में चित्रित किया। प्रकृति-संरक्षण देशप्रेम का ही हिस्सा है क्योंकि भारत की प्राकृतिक समृद्धि उसकी पहचान है।

प्रश्न 3

'कनक-शस्य-कमलधरे!' पंक्ति भारतभूमि की किन-किन विशेषताओं की ओर संकेत कर रही है?

हल

'कनक-शस्य-कमलधरे!' पंक्ति में तीन संकेत हैं:

1. कनक (सोना / सुनहरी): भारत की सुनहरी फसलों (गेहूँ, धान) और प्राकृतिक खनिज समृद्धि का संकेत। यह 'सोने की चिड़िया' वाले भारत के ऐतिहासिक वैभव की ओर भी इंगित करता है।
2. शस्य (फसल / धान्य): भारत की कृषि-परंपरा, खेती की समृद्धि और अन्न-धन की संपन्नता का संकेत। भारत एक कृषि-प्रधान देश है।
3. कमलधरे (कमल धारण करने वाली): कमल भारत का राष्ट्रीय फूल है और यह सरस्वती/लक्ष्मी का प्रतीक भी है — अर्थात् भारत ज्ञान, कला और समृद्धि की देवी है। कमल पंक (दलदल) में खिलता है — संघर्ष में भी सुंदरता बनाए रखने की प्रवृत्ति।

उत्तर: 'कनक-शस्य-कमलधरे' में भारत की कृषि-संपन्नता (शस्य), प्राकृतिक/ऐतिहासिक वैभव (कनक) और ज्ञान-लक्ष्मी-स्वरूप (कमल) — तीन विशेषताओं की ओर संकेत है।

प्रश्न 4

'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार' पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट बताया गया है, क्यों?

हल

हिमालय को भारत का मुकुट बताने के कई कारण हैं:

1. भौगोलिक स्थिति: हिमालय भारत के उत्तर में स्थित है — जैसे मुकुट सिर पर होता है, हिमालय भारत के 'सिर' (उत्तरी छोर) पर है।
2. शुभ्र (श्वेत) बर्फ: हिम-तुषार (बर्फ और ओस) से ढका हिमालय श्वेत (सफेद) और उज्ज्वल है — जैसे मुकुट मणियों से जड़ा होता है।
3. रक्षा-कवच: मुकुट राजा की सुरक्षा और गौरव का प्रतीक है। हिमालय भी भारत को शत्रुओं से बचाने वाला प्राकृतिक रक्षा-कवच है।
4. महानता का प्रतीक: विश्व की सर्वोच्च पर्वत-श्रृंखला होने के कारण हिमालय भारत के गौरव और महानता का शिखर है।
5. रूपक अलंकार: यहाँ हिमालय (उपमेय) में मुकुट (उपमान) का अभेद स्थापित है — यह रूपक अलंकार है।

उत्तर: हिमालय उत्तर में सिर-स्थान पर स्थित है, श्वेत हिम से आच्छादित है (जैसे मुकुट मणियों से), भारत का रक्षक है और उसकी महानता का शिखर है — इसीलिए उसे भारत का मुकुट कहा गया है।

प्रश्नावली 10.4 — कविता का सौंदर्य — विशेषताएँ

प्रश्न 1

नीचे दी गई विशेषताओं के अनुसार कविता में से उन विशेषताओं वाली पंक्तियाँ ढूँढ़कर लिखिए: (i) प्रकृति का मानवीकरण (ii) आलंकारिक प्रयोग (iii) समस्त पद/सामासिक पद का प्रयोग (iv) संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग

हल

(i) प्रकृति का मानवीकरण:

— 'तरु-तृण-वन-लता वसन, अंचल में खचित सुमन' — वन-लता को भारतमाता का वस्त्र और आँचल में फूल जड़े होना — प्रकृति को मानव-वस्त्राभूषण की तरह चित्रित किया है।

— 'गंगा ज्योतिर्जल-कण, धवल धार हार गले' — गंगा को गले का हार बताया — नदी का मानवीकरण।

— 'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार' — हिमालय को मुकुट बताया — पर्वत का मानवीकरण।

— 'गर्जितोर्मि सागर-जल, धोता शुचि चरण युगल' — समुद्र का चरण-प्रक्षालन करना — जल का मानवीकरण।

(ii) आलंकारिक प्रयोग:

— 'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार' — रूपक अलंकार (हिमालय = मुकुट)।

— 'शतमुख-शतरव-मुखरे!' — अनुप्रास अलंकार ('श' वर्ण की पुनरावृत्ति)।

— 'तरु-तृण-वन-लता वसन' — रूपक (प्रकृति = वस्त्र) और अनुप्रास ('व' + 'त')।

(iii) समस्त पद/सामासिक पद का प्रयोग:

— 'कनक-शस्य-कमलधरे' — द्वंद्व + बहुव्रीहि/तत्पुरुष समास।

— 'शतदल' — बहुव्रीहि समास (सौ दलों वाला = कमल)।

— 'ज्योतिर्जल-कण' — कर्मधारय समास।

— 'शतमुख-शतरव' — बहुव्रीहि समास।

— 'हिम-तुषार' — द्वंद्व/कर्मधारय समास।

(iv) संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग:

— 'प्राण प्रणव ओंकार, ध्वनित दिशाएँ उदार' — प्रणव, ओंकार, ध्वनित, उदार जैसे तत्सम शब्द।

— 'गर्जितोर्मि सागर-जल, धोता शुचि चरण युगल' — गर्जितोर्मि, शुचि, युगल जैसे संस्कृत शब्द।

— 'स्तव कर बहु-अर्थ-भरे!' — स्तव (स्तुति) संस्कृत शब्द।

उत्तर: (i) प्रकृति-मानवीकरण: 'तरु-तृण-वन-लता वसन', 'धवल धार हार गले', 'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार', 'धोता शुचि चरण युगल'; (ii) आलंकारिक: 'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार' (रूपक), 'शतमुख-शतरव-मुखरे' (अनुप्रास); (iii) सामासिक: 'कनक-शस्य-कमलधरे', 'शतदल', 'ज्योतिर्जल-कण', 'शतमुख-शतरव'; (iv) संस्कृतनिष्ठ: 'प्राण प्रणव ओंकार', 'शुचि चरण युगल', 'स्तव कर बहु-अर्थ-भरे'

प्रश्नावली 10.5 — विषयों से संवाद — चुनिंदा प्रश्न

प्रश्न 1

'शतमुख-शतरव-मुखरे!' पंक्ति में भारत के विविध पर्व, उत्सव और रीति-रिवाज किस प्रकार 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को साकार करते हैं?

हल

'शतमुख-शतरव-मुखरे!' का अर्थ है — सौ मुखों और सौ प्रकार की ध्वनियों से मुखर (गुंजायमान)।
यह पंक्ति भारत की विविधता का प्रतीक है — सैकड़ों भाषाएँ, बोलियाँ, पर्व, उत्सव, रीति-रिवाज और कलाएँ — सब मिलकर एक विशाल राष्ट्र की ध्वनि बनाते हैं।
उदाहरण:
— उत्तर भारत में दीपावली, दक्षिण में ओणम, पूर्व में दुर्गापूजा, पश्चिम में गणेशोत्सव — अलग-अलग ध्वनियाँ (शतरव) फिर भी सब भारतीय एकता की एक धुन।
— पंजाबी लोहड़ी, बंगाली बिहू, मराठी गुड़ी पड़वा, तमिल पोंगल — ये सभी 'शतमुख' का प्रतीक हैं।
'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना: इस विविधता के बावजूद सब का उद्देश्य एक है — राष्ट्र का उत्थान और सामाजिक सद्भाव। सांस्कृतिक आदान-प्रदान से हम एक-दूसरे की परंपराएँ सीखते और सम्मान करते हैं — यही 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' है।

उत्तर: 'शतमुख-शतरव-मुखरे' भारत की भाषिक-सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक है। देश के विभिन्न पर्व-उत्सव (दीपावली, ओणम, दुर्गापूजा, पोंगल) अलग-अलग रूपों में एक ही राष्ट्रीय एकता की भावना को साकार करते हैं — यही 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना है।

प्रश्न 2

कविता में गंगा को भारत के स्वच्छ और श्वेत हार एवं हिमालय को मुकुट के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। वर्तमान संदर्भ में बताइए कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन ने हमारी नदियों और हिमालय को किस प्रकार प्रभावित किया है?

हल

कवि की कल्पना में गंगा 'धवल धार हार' (श्वेत और पवित्र) थी और हिमालय 'शुभ्र हिम-तुषार मुकुट' (चमकदार बर्फीला मुकुट) था।
वर्तमान में प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:
गंगा पर प्रभाव:
— औद्योगिक कचरा, घरेलू अपशिष्ट और कृषि रसायनों से गंगा का जल प्रदूषित हो गया है।
— गंगा अनेक स्थानों पर अब 'धवल' (श्वेत और स्वच्छ) नहीं रही — जल काला और दुर्गंधयुक्त हो गया है।
— गंगा एक्शन प्लान और नमामि गंगे जैसी योजनाएँ चलाई जा रही हैं।
हिमालय पर प्रभाव:
— जलवायु परिवर्तन (ग्लोबल वार्मिंग) के कारण हिमालय के हिमनद (ग्लेशियर) तेज़ी से पिघल रहे हैं।
— 'शुभ्र हिम-तुषार' (चमकदार बर्फीला मुकुट) धीरे-धीरे सिकुड़ रहा है।

— इससे नदियों का जल-प्रवाह असंतुलित हो रहा है और भूस्खलन बढ़ रहे हैं।

निष्कर्ष: कवि की कल्पना का 'धवल हार' और 'शुभ्र मुकुट' आज पर्यावरण संकट में है। इसे बचाना हमारी जिम्मेदारी है।

उत्तर: प्रदूषण ने गंगा की स्वच्छता नष्ट की है और जलवायु परिवर्तन से हिमालय के हिमनद पिघल रहे हैं — कवि का 'धवल हार' और 'शुभ्र मुकुट' आज पर्यावरण संकट में है।

प्रश्नावली 10.6 — समास — समस्त पद एवं विग्रह

प्रश्न 1

कविता में से चुनकर दिए गए सामासिक पदों के समास-विग्रह कीजिए: शतदल, ज्योतिर्जल, शतमुख, सागरजल

हल

1. शतदल —
समास-विग्रह: सौ दलों (पंखुड़ियों) वाला = कमल।
समास का प्रकार: बहुव्रीहि समास (शतदल शब्द स्वयं कमल का पर्याय नहीं, बल्कि 'सौ दलों वाला' विशेषण है जो बाहरी अर्थ — कमल — की ओर संकेत करता है; कमल समास-घटकों से बाहर है)।

2. ज्योतिर्जल —
समास-विग्रह: ज्योति के समान (प्रकाशमान) जल, अर्थात् प्रकाशमय जल।
समास का प्रकार: कर्मधारय समास (विशेषण-विशेष्य संबंध: ज्योति-सा जल)।

3. शतमुख —
समास-विग्रह: सौ मुख हैं जिसके = (ईश्वर/ब्रह्म/भारत); अथवा सौ मुखों वाला।
समास का प्रकार: बहुव्रीहि समास (समस्त पद स्वयं किसी अन्य सत्ता का विशेषण है — 'सौ मुखों वाला भारत')।

4. सागरजल —
समास-विग्रह: सागर का जल।
समास का प्रकार: तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष — सागर 'का' जल)।

उत्तर: शतदल = सौ दलों वाला (कमल) — बहुव्रीहि; ज्योतिर्जल = ज्योति के समान जल — कर्मधारय; शतमुख = सौ मुखों वाला — बहुव्रीहि; सागरजल = सागर का जल — तत्पुरुष (षष्ठी)

प्रश्नावली 10.7 — अलंकार — समझ और प्रयोग

प्रश्न 1

(क) कविता में जहाँ-जहाँ अनुप्रास अलंकार आया है, उन पंक्तियों को खोजकर लिखिए।

हल

अनुप्रास अलंकार वहाँ होता है जहाँ एक ही वर्ण की क्रमिक पुनरावृत्ति हो।
कविता में अनुप्रास के उदाहरण:
1. 'शतमुख-शतरव-मुखरे!' — 'श' वर्ण की पुनरावृत्ति (शतमुख, शतरव), तथा 'म' की पुनरावृत्ति (शतमुख, मुखरे)।
2. 'तरु-तृण-वन-लता वसन' — 'त' वर्ण की पुनरावृत्ति (तरु, तृण) और 'व' वर्ण की पुनरावृत्ति (वन, वसन)।
3. 'गर्जितोर्मि सागर-जल / धोता शुचि चरण युगल' — 'ज' की आंशिक पुनरावृत्ति (गर्जि, जल)।
4. 'प्राण प्रणव ओंकार' — 'प्र' की पुनरावृत्ति (प्राण, प्रणव)।
5. 'ध्वनित दिशाएँ उदार' — 'द' वर्ण की पुनरावृत्ति (ध्वनित, दिशाएँ)।

उत्तर: अनुप्रास की प्रमुख पंक्तियाँ: 'शतमुख-शतरव-मुखरे!' ('श' की पुनरावृत्ति); 'तरु-तृण-वन-लता वसन' ('त' और 'व' की पुनरावृत्ति); 'प्राण प्रणव ओंकार' ('प्र' की पुनरावृत्ति)।

प्रश्न 2

(ख) कविता की उन पंक्तियों को खोजिए जहाँ रूपक अलंकार है। साथ ही यह भी बताइए कि कवि ने किस प्राकृतिक दृश्य या वस्तु को भारत का रूप मानकर चित्रित किया है?

हल

रूपक अलंकार वहाँ होता है जहाँ उपमेय में उपमान का अभेद (एकता) स्थापित की जाती है — अर्थात् दोनों को एक ही मान लिया जाता है।
कविता में रूपक के उदाहरण और कवि का आशय:
1. 'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार' —
रूपक: हिमालय की बर्फ (हिम-तुषार) = मुकुट। हिमालय में मुकुट का अभेद — कवि ने हिमालय पर्वत की श्वेत हिमाच्छादित चोटियों को भारत का मुकुट मानकर चित्रित किया है।

2. 'गंगा ज्योतिर्जल-कण, धवल धार हार गले' —
रूपक: गंगा की धवल (सफेद) धारा = हार। कवि ने गंगा नदी की चमकदार जलधारा को भारत के गले का हार मानकर चित्रित किया है।

3. 'तरु-तृण-वन-लता वसन' —
रूपक: तरु, तृण, वन, लता = वसन (वस्त्र)। कवि ने वृक्ष, तिनके, जंगल और लताओं को भारत के वस्त्र (आच्छादन) के रूप में चित्रित किया है।

4. 'अंचल में खचित सुमन' —
रूपक: आँचल में जड़े पुष्प। भारत के भूखंड के कोनों में खिले फूल भारतमाता के आँचल में जड़े आभूषण हैं।

उत्तर: रूपक: (1) 'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार' — हिमालय को मुकुट; (2) 'धवल धार हार गले' — गंगा को हार; (3) 'तरु-तृण-वन-लता वसन' — वन-लता को वस्त्र; (4) 'अंचल में खचित सुमन' — पुष्पों को आँचल का आभूषण। कवि ने भारत की प्रकृति (हिमालय, गंगा, वन) को भारतमाता के अंग-आभूषण-वस्त्र के रूप में चित्रित किया है।